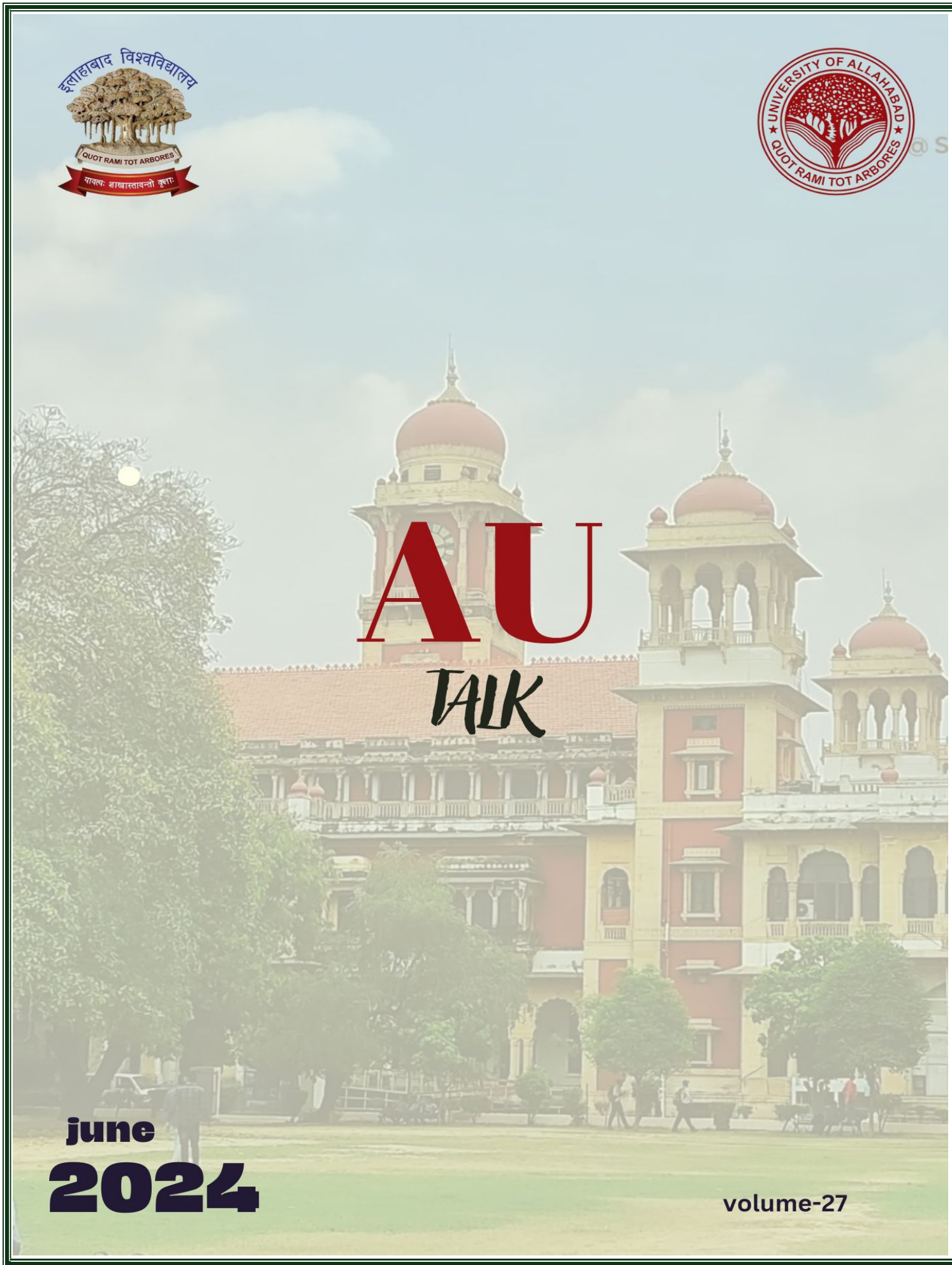

AU TALK

june

2024

volume-27

Editorial Board

Patron

Prof. Sangita Srivastava Honourable Vice Chancellor, University of Allahabad

Chief Editor

Dr Chandranshu Sinha Associate Professor, Department of Psychology, University of Allahabad; chandranshu.sinha@allduniv.ac.in; Mob: 9650670222

Board of Editors

Dr Nakul Kundra Associate Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
drnakulkundra@allduniv.ac.in

Dr Jaswinder Singh Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
dr.jaswindersingh@allduniv.ac.in

Dr Charu Vaid Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
drcharuvaid@allduniv.ac.in

Dr Shiban Ur Rahman Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad
drshibanur@allduniv.ac.in

Dr Sandeep K. Meghwal Assistant Professor, Department of Visual Arts, University of Allahabad; skmeghwal@allduniv.ac.in

Mr. Vishal Vijay Assistant Professor, Centre for Theaters and Films, University of Allahabad; vishalvijay@allduniv.ac.in

Ms. Jigyasa Kumar Curator, Vizianagram Hall and Museum, University of Allahabad; vizianagramcurator.au@gmail.com

CONTENTS

	Page No.
International Yoga Day Celebration at UoA	**4-5**
Department of Anthropology	**6**
Rajbhasha Cell, UoA & Regional Archives, Prayagraj	**7-8**
Rajbhasha Cell	**9**
Research Publications	**10**
Article: Reflections by Dr Vijay Roy	**11**
Book & Movie of the Edition	**12**

INTERNATIONAL YOGA DAY AT UNIVERSITY OF ALLAHABAD

On 21st June, 2024, the University of Allahabad celebrated International Yoga Day with great enthusiasm in the online and offline modes, honouring the physical and spiritual benefits of Yoga. The hybrid event allowed the university community to participate from anywhere during the summer vacation, promoting inclusivity and widespread engagement. The activities of the day commenced with an early morning session led by a Yoga instructor, who guided participants through various asanas and pranayama techniques.

The Honourable Vice-Chancellor, Prof. Sangeeta Srivastava, highlighted the importance of Yoga in promoting holistic health and well-being, emphasizing its role in stress management and spiritual growth. It is well said that true Yoga is not about the shape of one's body but the shape of one's life. Yoga is not to be performed; it is to be lived. The art of practising YOGA helps control an individual's mind, body, and soul. Yoga helps in all-round fitness. The celebration concluded with a meditation session to foster inner peace and mindfulness, reinforcing Yoga's timeless relevance in today's fast-paced world.

Here are some glimpses of the event!!

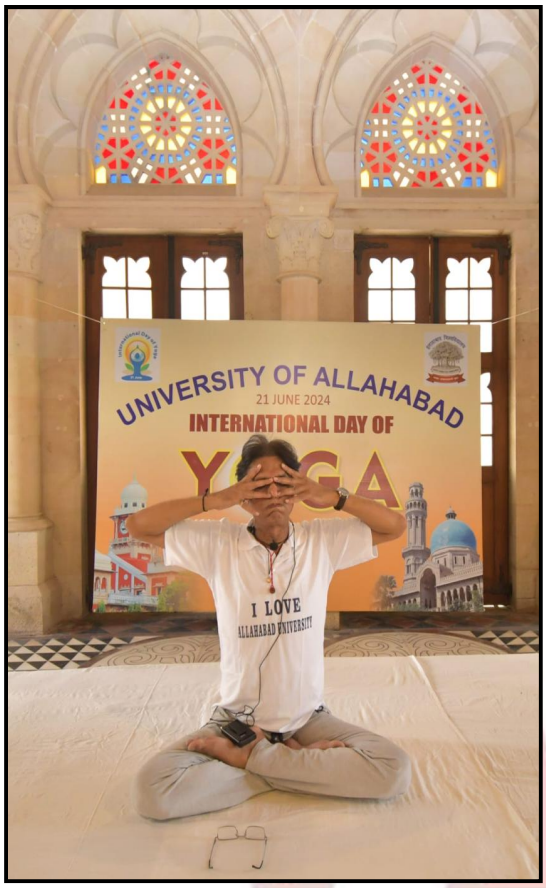
UNIVERSITY OF ALLAHABAD
21 JUNE 2024
INTERNATIONAL DAY OF
I LOVE

Galaxy A35 5G

मानवविज्ञान विभाग

मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद **विश्वविद्यालय** के विद्यार्थियों सहित 37 सदस्यीय शोधदल द्वारा 30 मई, 2024 से 13 जून, 2024 तक उत्तराखंड की भोक्सा जनजाति पर मानववैज्ञानिक क्षेत्रकार्य आयोजित किया गया। इलाहाबाद **विश्व**विद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव की **अभिप्रेरणा** से विभागाध्यक्ष प्रो. राहुल पटेल के नेतृत्व में यह **क्षेत्रकार्य** भोक्सा जनजाति के समग्र अध्ययन पर आधारित था। शोधदल का प्रयास था कि अपने अध्ययन के परिणामों के आधार पर कुछ ऐसी नीतियों को सुझाया जाए जिससे भोक्सा समाज अपनी खोई हुई पहचान को पुनः स्थापित कर सके।

इसी क्रम में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शोधदल के सदस्यों ने भोक्सा जनजाति के सदस्यों के साथ ग्राम मेहूवाला खालसा में पौधरोपण किया।

राजभाषा अनुभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज

18 जून 2024 को राजभाषा अनुभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में प्रदर्शनी का आयोजन हुआ।

"बुंदेले हर बोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी...खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी"....

इस कविता की संगीतमयी प्रस्तुति राजभाषा अनुभाग के 'बरगद कलामंच' के विद्यार्थियों ने दी तो सभागार तालियों से गूंज उठा। अवसर था वीरांगना रानी **लक्ष्मीबाई** के बलिदान दिवस के अवसर पर राजभाषा अनुभाग और क्षेत्रीय अभिलेखागार प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अभिलेख प्रदर्शनी एवं संगोष्ठी का।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. आलोक **प्र**साद, इतिहास विभाग ने कहा कि ये बहुत ही सुखद है कि क्षेत्रीय अभिलेखागार प्रयागराज इलाहाबाद विश्वविद्यालय के **वि**द्यार्थियों को आमंत्रित कर रहा है कि वह आए और अभिलेखों को अवलोकन करें। जिसका उपयोग वह अपने शोध कार्य में कर सकते हैं । इतिहास की और हिंदी की समझ को विस्तार इस तरह के कार्यक्रम देते हैं। जो इतिहास रानी वीरांगना रानी **लक्ष्मीबा**ई का बताया जा रहा है उसको सही से जानना है तो उसका **मा**ध्यम अभिलेखागार में रखे ऐतिहासिक दस्तावेज हैं ।

प्रो. संतोष भदौरिया (समन्वयक राजभाषा कार्यान्वयन समिति) ने कहा कि विद्यार्थियों को जो झूठ सोशल मीडिया पर फैलाया जा रहा है उससे बचना हैं। हमें इतिहास को जानना है तो सही तरीके से जानना है और उसका एक ही माध्यम है वह हैं दस्तावेज। उन्होंने आगे बताया कि झांसी सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। सर्वप्रथम 05 जून, 1857 को 12वीं बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री के सैनिकों ने विद्रोह किया। जेल दरोगा बख्शीश अली ने 06 जून को क्रांतिकारियों का नेतृत्व करते हुए झांसी किले का घेराव किया । अंग्रेज भागने पर विवश हुए कार्तिकारियों ने झांसी के समस्त कार्यालयों पर

अधिकार कर कैदियों की स्वतंत्र कर दिया गया। 11 जून, 1857 को रानी लक्ष्मीबाई के सहयोग से क्रांतिकारियों ने दिल्ली कूच किया। 12 जून, 1857 को रानी की सत्ता स्थापित हुई। रानी की सरकार में मोरोपंत तांबे, लक्ष्मण राव, गंगाधर, काशीनाथ, जवाहर सिंह, लल्लू बख्शी प्रमुख थे। सदाशिव राव को रानी ने बन्दी बनाया तथा ओरछा सेना के आक्रमण को विफल किया। फरवरी, 1858 में रानी सक्रिय रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन में सम्मिलित हुई। 06 मार्च, 1858 को मोरोपंत तांबे ने वरूणा सागर विजित कर कम्पनी की सामग्री पर अधिकार किया। 04 अप्रैल, 1858 को रानी किला छोड़कर कालपी गईं । 05 अप्रैल, को झांसी पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। तात्या टोपे व सिंधिया सेना की सहायता से ग्वालियर दुर्ग पर अधिकार किया। 18 जून, 1858 को रानी वीरगति को प्राप्त हुई।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक और प्रभारी कुलसचिव श्री अशोक कुमार कनौजिया ने कहा कि यह यह महत्वपूर्ण है कि आज हम इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान दिवस के अवसर पर इस कार्यक्रम को आयोजित कर रहे हैं। इस तरह के कार्यक्रम विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करते हैं।

क्षेत्रीय अभिलेखागार प्रयागराज के श्री राकेश कुमार वर्मा जी ने प्रदर्शनी के उद्देश्य को बताया और कहा कि यह प्रदर्शनी रानी लक्ष्मीबाई द्वारा 1857 में किए गए आंदोलन को दर्शाने के साथ-साथ उस समय जो अंग्रेजों ने जो दस्तावेज जप्त किए थे उनको दर्शा रही है। कुल 25 महत्वपूर्ण अभिलेख की सूची को इसमें दर्शाया गया है ।

'बरगद कलामंच' की ओर से सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा 'रचित खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' की संगीतमय प्रस्तुति दी ।

विद्यार्थियों के लिए एक पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसका विषय था 'खूब लड़ी मर्दानी @1857 रानी लक्ष्मीबाई'।

स्वागत वक्तव्य के साथ राजभाषा अनुभाग के हिंदी अधिकारी श्री प्रवीण श्रीवास्तव ने राजभाषा अनुभाग की गतिविधियों के बारे में बताया। राजभाषा अनुभाग विद्यार्थियों पर केंद्रित कार्यक्रम वर्षभर करता है। कार्यक्रम का संचालक हिंदी अनुवादक श्री हरिओम कुमार ने किया।

राजभाषा अनुभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

11 जून 2024 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित हुई । माननीय कुलपति महोदया के नेतृत्व में विश्वविद्यालय अकादमिक और प्रशासनिक रूप से आगे बढ़ रहा है। कार्मिकों की नियुक्तियां की जा चुकी हैं और भविष्य में भी कई पदों पर नियुक्तियां प्रस्तावित हैं। "हिंदी राजभाषा में कार्यालयीन कार्य को कैसे निष्पादित करें" इस विषय पर नए कार्मिकों को प्रशिक्षण देना अनिवार्य है। नए सत्र से एक दिवसीय और पांच दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार को गति दी जाएगी। ये बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. नरेंद्र कुमार शुक्ल ने बतौर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में वित्त वर्ष 24-25 की प्रथम तिमाही की बैठक में कहीं।

इससे पूर्व राजभाषा कार्यान्वयन समिति के समन्वयक प्रो संतोष भदौरिया जी ने अध्यक्ष महोदय और सदस्यों के स्वागत के साथ ही अवगत कराया कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय का राजभाषा अनुभाग अपने ऐसे समस्त शिक्षकों, अधिकारियों और कार्मिकों का डाटा तैयार कर रहा है जो हिंदीतर क्षेत्र से आते हैं तथा जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है। ऐसे सभी कार्मिकों को 'पारंगत' प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। आज हिंदी भाषा में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं किंतु इसमें मार्गदर्शन की आवश्यकता है ।

विद्यार्थियों के लिए भी हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाओं पर केंद्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम के आरंभ के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों को केंद्र में रख कर नए सत्र से विभिन्न कार्यक्रम राजभाषा अनुभाग आयोजित करेगा। नए सत्र में 31 जुलाई 2024 को प्रेमचंद जयंती के अवसर पर संघटक महाविद्यालयों के सहयोग से नाट्य मंचन और सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जायेंगी।

वित्त वर्ष 24-24 की प्रथम तिमाही की बैठक की कार्यसूची हिंदी अधिकारी श्री प्रवीण श्रीवास्तव ने प्रस्तुत की, जिसमे मुख्यतः नाराकास प्रयागराज कार्यालय 2 का इलाहाबाद विश्वविद्यालय को नोडल कार्यालय बनाया जाना, पांच दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन, प्रस्तावित विनयम अनुरूप सदस्यों को समिति में शामिल करना, बरगद कला मंच को नए सत्र में विस्तारित करना शामिल है।

पिछली बैठक के कार्यवृत की पुष्टि के उपरान्त बिंदुवार विभिन्न मुद्दों पर उपस्थित समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपना-अपना परामर्श दिया ।

कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अनुभाग के हिंदी अनुवादक हरिओम कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य डॉ. दीनानाथ मौर्य ने किया । इस बैठक में समिति सदस्य उपस्थित रहे।

RESEARCH PUBLICATIONS

S. No.	Name of the author	Department/Centre	Journal
1.	Dr Awadh Bihari Yadav	Centre of Biotechnology	ACS Biomaterials
2.	Dr Tushar Gupta	Department of Education	The Third Concept
3.	Dr. Somanjana Khatua	Department of Botany	European Journal of Medical Research

AWARDS/LECTURES/HONOURS

- Dr Somanajana Khatua, Assistant Professor, Department of Botany bagged Best Herbal Oral Presentation Award at International Conference on "Medicinal Plants Research and Tribal Health Medicine" organized by Department of Botany, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya

- Dr Somanajana Khatua, Assistant Professor, Department of Botany bagged Woman Scientist Award at International Conference on "Fungal Biology and Plant-Microbe Interactions 2024" organized by Centre of Advanced Study in Botany, Institute of Science, Banaras Hindu University

Reflections

***Dr. Vijay Kumar Roy**

I came to know about the University of Allahabad during the days of my BA English Honours. My English teacher told me the story of Sir Ganganath Jha and Sir Amarnath Jha – father and son that the former handed over the charge of vice-chancellorship of the University of Allahabad to the latter. This created history in Indian education system. In Darbhanga both of them are often cited as "Worthy father's worthy son."

This background is necessary when we discuss about the ablest leadership, effective teaching, and quality research as the need of the hour in order to establish our university's presence at global level.

Leadership plays an important role in shaping of a university but it wholly depends on professionalism, best practices, academic integrity, ethical values, and equity all inherent in its staff to compete with global standards.

Today, success of a university depends on its better ranking at national and international levels. Recently UoA has made records in long due appointments and promotions of its staff and faculty members.

We should now attract students of the foreign countries in all disciplines. Alumni of the university can prove as ambassadors of the university far and wide. Those teachers who have experience of studying or teaching abroad they can also help in this mission. Online presence of teachers and research scholars on all international platforms for exchange of knowledge and active participation in academic discussion can also help in creating our own space. Student and teacher exchange programmes with top ranking organizations of the world also seek our attention.

Teachers are required to prepare future-ready workforce by offering skills-based courses to meet the standards of the international job markets. Of course, education is not only meant for providing jobs but also preparing responsible citizens who can value constitutional rights and duties equally, and respect progressive and inclusive society.

*Associate Professor of English, University of Allahabad

BOOK OF THE EDITION

The Earthspinner

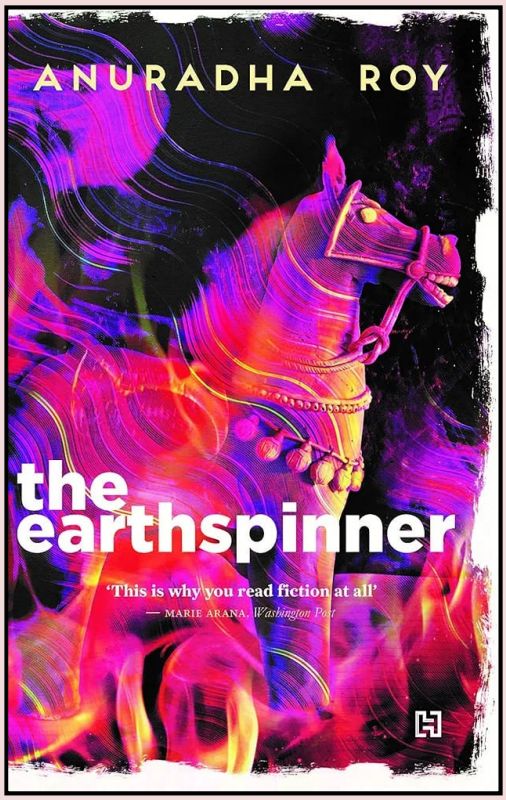

MOVIE OF THE EDITION

Manjummel Boys

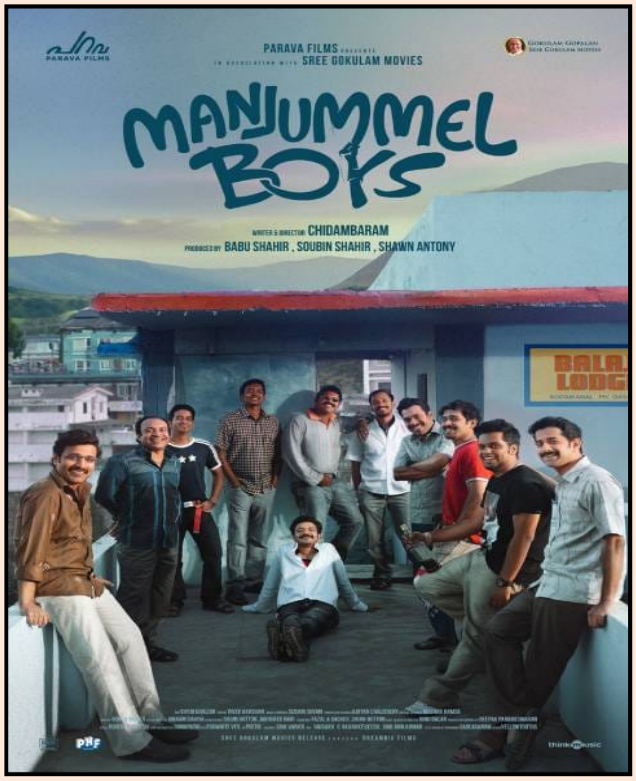

Offering our deepest Condolences

The University of Allahabad faculty members, staff and students condole the untimely demise of Dr. Anup Kumar. The loss is irreparable and we express our condolences in the words of Dr. Chitaranjan Kumar, Asst. Prof. Dept of Hindi.

कई बार लगता है जीवन त्रासद स्मृतियों का कोलाज मात्र है। हम सब सिर्फ पुतले हैं। डोरी तो उसके हाथ में है। किसकी सांस कब थम जाए कहा नही जा सकता। सारी योजनाएं धरी रह जाती है और व्यक्ति एकाएक चला जाता है। रह जाती हैं उसकी परछाई, कुछ तस्वीरें और साथ बिताए लम्हों की कचोटती यादें।

कभी नही सोचा था कि अनूप भैया को ऐसे भी देखना होगा। उन्हें श्रद्धांजलि देनी होगी। अभी उनकी उम्र ही क्या थी। सिर्फ 43 साल। आज सुबह 6 बजे श्मशान में एक ही परिवार के तीन तीन व्यक्तियों की चिता एक साथ जली। पिता के बगल में पुत्र की अर्थी। भाई के बगल में भाई की अर्थी। इससे ह्रदय विदारक दृश्य और क्या होगा। ओह ईश्वर भी इतना निर्दय हो सकता है।

अब वे नही हैं। पंच तत्वों का शरीर पंच तत्वों में विलीन हो गया। आप हमेशा याद आयेंगे भैया। हिंदी विभाग जाते वक्त मेरी आंखें इकोनॉमिक्स विभाग की पुरानी इमारत को रह रह कर टटोला करेगी। मैं हमेशा मुड़ मुड़ कर आपको देखूंगा। हमारा विभाग भी आस पास था। हमारा आवास भी आस पास था। हम दोनों के गांव तक आस पास थे। आज आपने साथ छोड़ दिया और दूर निकल गए। अंतिम प्रणाम कहते हुए होंठ कांप रहें हैं। आपको श्रद्धांजली देते हुए मैं अपने हाथ नहीं जोड़ पा रहा। मुझे क्षमा कीजिएगा भैया।

- डा चितरंजन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग